emendatum exscripsi: ततो द्वाःस्थो राजानं प्रणम्य विज्ञापयामास। देव कोऽपि सांयात्रिको द्वारि तिष्ठति राजदर्शनाकांक्षी। राजा प्राह। प्रवेशय। स च सांयात्रिको राजानं प्रणम्य मदनपट्टिकां पुरो मुमोच। राजा तां मदनपट्टिकां दृष्ट्वा पप्रच्छ। वत्स केयं मदनपट्टिका किं चास्यां लिखितमस्ति। सांयात्रिको प्राह। राजन्नीरथावकस्मादेव वाहने स्खलिते मम च तारकैः शोष्यमाने वार्धौ तत्र मध्यमग्नं श्रीशिवायतनं दृष्टं। तस्य शिवायतनस्य पुरो महद्भिरक्षरैर्विराजिताः शिलाश्च। ततो मया ताभ्यो मदनपट्टिकया तानि बुद्धा (?) कियन्त्यपि वृत्तान्याहृतानि। ततो राजा तां हनूमत्कृतां खंडप्रशस्तिमालोक्य तस्य सांयात्रिकस्य कवित्वसंख्यया सुवर्णकोटीर्दत्तवान्। तत्र मदनपट्टिकायां चरणद्वयं दृष्टवान्। राजा वाचयति।

इह खलु विषमः पुरा कृतानां फलति हि जंतुषु कर्मणां विपाकः।

उत्तरार्धं मदनपट्टिकायां नास्ति। ततो राजा महाकवीन्प्राह। एतस्य वृत्तस्य भवद्भिरुत्तरार्धमर्थसंगत्या कर्तव्यं। ततस्ते महाकवयः क्षौणिपालाज्ञयोत्तरार्धं पठंति स्म॥

क्व च जनकतनया क्व रामचंद्रः क्व च दशकंधरमंदिरे निवासः॥[1]

ततो राजा तुतोष। तं वृथा संतुष्टं भोजं दृष्ट्वा सीता प्राह। देव यथा विद्वद्भिरुत्तरार्धमभाणि तथा हनूमतोऽभिप्रायो नास्ति। ततो राजा सेनया सह दक्षिणोदधेस्तीरमासाद्य तानि जलनिधौ मग्नानि वृत्तानि प्रकटीचकार। एवं महता यत्नेन तच्चोत्तरार्धमागात्।

हरशिरसि शिरांसि यानि रेजुर्हरि हरि तानि लुठंति गृध्रपादैः॥

Idem distichon in Hanúmannáṭaka XIV, 43. (ed. Bahádur, dist. 592.) legitur, unde antiquius huic comoediae nomen *Khaṇḍapraṣasti* fuisse discimus. De Khaṇḍapraṣasta carmine (n°. 232.) ne cogitemus, vel metro ipso prohibemur.

De Ballálae aetate haec comperi. Filium Ranganátham, nepotem Viṣvarúpam habuit, qui astronomi seculo septimo decimo ineunte vixerunt. Ipse igitur exeunte seculo sexto decimo floruit.

In fine haec leguntur: श्रीमतो धाराधीश्वरस्य शतशः प्रबन्धाः संति। मया च यथामति कियन्त्यपि लोकतः श्रुतानि वृत्तानि एकत्र कृतानि॥ अमङ्गलमिति मत्वा राज्ञो भोजस्यावसानसमयानि पद्यानि न लिखितानि॥ श्रीकालिदासस्य वेश्याहस्तेन मरणं गर्हितमिति कृत्वा नात्र लिखितं॥ पावकोत्सिष्टेत्यादि मोक्षं न लभते इत्यादि॥ तथा च॥ यः कालिदासमरणं भुवि निश्चिकाय भोजः स एव किल भावपदस्य वोद्धा॥ इत्यादिजगत्प्रसिद्धा कथा नात्र लिखिता॥ etc.

Bhojaprabandhae partem Pavie in Journal Asiatique 1844 enarravit, idem textum e duobus codicibus Parisiacis anno 1855 edidit. De codice Havniensi cf. Westergaard, p. 14.

Codex post annum 1810 satis nitide exaratus est. (Mill 17.)

[1] Hunc versum auctor consulto claudicantem fecit.

321—324.

Volumina quatuor. Lit. Devan. Charta Europ. Long. $11\frac{1}{2}$. Lat. $9\frac{1}{2}$. Linn. voll. I. II. et tertii usque ad fol. 112. undevicenae, postea vicenae singulae.

Inest in his voluminibus *Kathásaritságaras* (oceanus, narrationum fluvios in se recipiens), a *Somadeva* Kaṣmírensi, Rámae filio, compositus. Majorem narrationum collectionem, *Vṛihatkathá* dictam, se excerpsisse, auctor in prooemio declarat. Opus libros 18. (lambaka) continet, iique in capita (taranga) divisi sunt.

Vol. I. Foll. 210. I. Kathápíṭha, 8 Taranga, fin. in fol. 32^a; II. Kathámukha, 6 Tar. fol. 63^a; III. Lávánaka, 6 Tar. fol. 106^a; IV. Naraváhanajanana, 3 Tar. fol. 125^a; V. Chaturdáriká, 3 Tar. fol. 152^b; VI. Madanamanchuká, 8 Tar. fol. 210^b.

Vol. II. Foll. 179. VII. Ratnaprabhá, 8 Tar. fol. 59^a; VIII. Súryaprabhá, 7 Tar. fol. 116^a; IX. Alankáravatí, 6 Tar. fol. 179^a.[2]

Vol. III. Foll. 178. X. Ṣaktiyaṣas, 10 Tar. fol. 77^b; XI. Velá, 1 Tar. fol. 83^a; XII. Ṣaṣánkavatí, 36 Tar. Caput septimum decimum in fol. 178^a. finitur. Capitibus 8–32. Vetálapanchavinṣatiká narratio continetur.

Vol. IV. Foll. 204. Liber XII. in fol. 77^b. desinit; XIII. Madirávatí, 1 Tar. fol. 85^a; XIV. Mahábhisheka, 2 Tar. fol. 94^b; XV. Panchalambaka, 2 Tar. fol. 108^b; XVI. Suratamanjarí, 3 Tar. fol. 130^b; XVII. Padmávatí, 6 Tar. fol. 165^b; XVIII. Vishamaṣíla, 5 Tar. fol. 204^a. Hoc libro Vikramáditya res gestae narrantur.

Capita quinque prima anno 1839 ab H. Brockhaus cum versione Germanica edita sunt.

Haec volumina anno 1824 (cf. vol. III. fol. 77^b.) e codice bono parum accurate transscripta sunt. Quae in fine legitur subscriptio (इदं बृहत्कथापुस्तकरत्नं मुनीशपंडितदयारामस्यार्थे लिखितं ब्राह्मणनारायणेन), e codice illo videtur desumta esse. (Wilson 316–319.)

325.

Lit. Devan. Charta Ind. Foll. 164. Long. 13. Lat. $6\frac{1}{2}$. Linn. 8.

Kathásaritságarae pars. Incipit a quarto libri IX. capite, et medio in nono capite libri X. desinit.

IX. *Alankáriká*, Tar. 4. fol. 15^b; 5. fol. 30^b; 6. fol. 57^a. X. *Ṣaktiyaṣas*, Tar. 1. fol. 68^a; 2. fol. 77^a; 3. fol. 88^b; 4. fol. 104^a; 5. fol. 124^a; 6. fol. 138^b; 7. fol. 150^b; 8. fol. 161^a.

Codex post annum 1820 negligenter exaratus est. (Mill 33.)

[2] In fine hujus capitis Nalae et Damayantís historia legitur.